5

देशभक्ति गीत

(क)

हिन्द देश के निवासी

भारतवर्ष विविधताओं का देश है। इस देश की धरती पर विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं जिसके कारण यहाँ के पेड़-पौधे, लोग, लोगों का रहन-सहन तथा पशु-पक्षी तक प्रभावित होते हैं। इन प्रभावों के मद्देनज़र हमें अत्यधिक विविधताएं दिखाई पड़ती हैं जो कि इस पृथ्वी पर बहुत ही कम देशों में विद्यमान हैं। प्रस्तुत गीत में इन्हीं विविधताओं का वर्णन किया गया है। इस वर्णन के माध्यम से गीतकार ने अपने देशभक्ति, देशप्रेम तथा भारतवर्ष की भव्यता को दर्शाने का एक सफल प्रयास किया है। भारतवासियों के रंग रूप, वेष, भाषा आदि की विभिन्नताओं का वर्णन है। बेला, गुलाब, जूही आदि पुष्पों तथा कोयल, पपीहें, बुलबुल आदि के द्वारा अनेकता में एकता का प्रदर्शन किया है। इसके अतिरिक्त इस धरती पर बहने वाली अनेक पवित्र नदियों के उदाहरण द्वारा हमारे देश की प्राकृतिक सम्पन्नता पर भी प्रकाश डाला गया है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

उद्देश्य

पाठ के अभ्यास के पश्चात् विद्यार्थी:

- उल्लेखित देश भक्ति गीत की पृष्ठभूमि बता पायेंगे;
- उल्लेखित देश भक्ति गीत को सही रूप में प्रस्तुत कर पायेंगे;
- दिये गीत के बोलों का वर्णन कर पायेंगे;
- दिये गीत के बोलों को लिख पायेंगे।

हिन्द देश के निवासी

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं
रंग-रूप, वेश-भाषा चाहे अनेक हैं ।।

(1) बेला, गुलाब, जूही, चम्पा, चमेली
प्यारे प्यारे फूल गूंथे माला में एक हैं।।

(2) कोयल की कूक न्यारी, पपीहे की टेर प्यारी
गा रही तराना बुलबुल, राग मगर एक है।।

(3) गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी
जाके मिल गई सागर में, हुई सब एक हैं।।

टिप्पणी

स्वरलिपि

ताल : कहरवा (8 मात्रा)

स्थायी

सा	–रे	स	–रे	सा	–रे	सानि	प़
हि	न्द	दे	ऽश	के	ऽनि	वाऽ	सी
X				O			
–	प़नि़	–सा	–नि	सरे	–रे	रे	–
ऽ	सभी	ऽज	ऽन	एऽ	ऽक	हैं	ऽ–
X				O			
म	–म	म	मग	रेग	–ग	रेसा	सानि
रं	ऽग	रू	ऽप	वेऽ	ऽश	माऽ	षाऽ
X				O			
–	नि़सा	नि़सा	रेरे	सा	–सा	सा	–
ऽ	चाऽ	ऽहे	ऽअ	ने	ऽक	हैं	ऽ
X				O			

अंतरा

–	ग–	रेग	–म	प	–प	प	प
ऽ	बेऽ	ऽला	ऽगु	ला	ऽब	जू	ही
X				O			
–	प	–प	–ध	ग	प	म	ग
ऽ	चं	ऽपा	ऽच	मे	ऽ	ली	ऽ
X				O			
–	म	गरे	सासा	नी	–नी	सरे	रेग
ऽ	प्या	रेप्या	ऽरे	फू	ऽल	गूँऽ	थेऽ
X				O			
–	म	गरे	सासा	सा	–सा	सा	–
ऽ	मा	ऽला	ऽमें	ए	ऽक	हैं	ऽ
X				O			

अन्य अंतरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

पाठगत प्रश्न 5.1

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. देशभक्ति गीत में विविधता को सुंदरता से ..... किया गया है।
2. कवि ने भारत के लोगों को ..... बताते हुए अलग-अलग ..... का वर्णित किया है।
3. कवि ने भारत के लोगों की तुलना अलग-अलग ..... की है, परन्तु अन्त में .... में मिल गई है।

टिप्पणी

(ख)

जय जन भारत

इस गीत में कवि ने हमारे देश की प्रमुख विशेषतायें वर्णित की हैं तथा भारत के प्रति अपनी भक्ति भावना प्रदर्शित की है। हमारे देश की शान हिमालय पर्वत तथा पवित्र नदी गंगा की महिमा का भरपूर गुणगान किया है। कवि ने भारत को एक सजीव प्रतिमा के रूप में वर्णित किया है। जिस भूमि के माथे पर हिमालय पर्वत सुशोभित है, हृदय में पावन गंगा हार के समान प्रवाहित हो रही है, जिसकी कटि में विन्ध्याचल पर्वत और चरणों में अथाह जलराशि लिये सागर शोभायमान है, ऐसी धरती की हम वन्दना करते हैं। प्रकृति की निरन्तर गतिशीलता को भारतवर्ष की इस भूमि पर हरे-भरे खेतों, नदियों और निरन्तर काम करते हुए लोगों की महिमा गाकर हम गौरव का अनुभव करते हैं। संसार की सर्वाधिक पुरानी सभ्यता के रूप में भारत अग्रणी है। मानव को सत्य, अहिंसा, शान्ति का संदेश देने वाला यह देश वन्दनीय एवं पूजनीय है। प्रस्तुत बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में दी गयी सी.डी. को सुनें।

जय जन भारत

जय जन भारत जन मन अभिमत
जन गण तंत्र विधाता

1. गौरव भाल हिमालय उज्जवल हृदय हार गंगा जल
   कटि विंध्यांचल सिंधु चरण तल महिमा शाश्वत गाता

2. हरे खेत लहरें नद निर्झर, जीवन शोभा उर्वर
   विश्व कर्मरत कोटि बाहुकर, अगणित पद ध्रुव पथ पर

3. प्रथम सभ्यता ज्ञाता, साम ध्वनित गुण गाता
   जय नव मानवता निर्माता, सत्य अहिंसा दाता
   जय हे, जय हे, जय हे, शांति अधिष्ठाता

स्वरलिपि

ताल-कहरवा (8 मात्रा)

नोट- इसमें पाँचवां काला स्केल का प्रयोग है।

स्थायी

X				O			
ग	ग	म	प	प	-	प	प
ज	य	ज	न	भा	ऽ	र	त

टिप्पणी

प	प	ध्	प	म	प	म	ग
ज	न	म	न	अ	भि	म	त
–	गग	–म	प	प	–	सां	प
ऽ	जन	–ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
ध	–	ध	–	म	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	प	ध	सां	–	ध	प
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
प	–	प	–	–	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा-I

X				O			
प	–	प	प	सां	–	सां	सां
गौ	ऽ	र	व	भा	ऽ	ल	हि
सां	–	रें	गं	सां	–	रें	रें
मा	ऽ	ल	य	उ	ऽ	ज्जव	ल
रें	रें	रें	रें	–	गं	सारें	सांनि
ह	द	य	हा	ऽ	र	गंऽ	ऽऽ
नी	–	नी	नी	धनी	सांनी	ध	प
गा	ऽ	ज	ल	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
–	म	प	प	प	–	प	प
ऽ	क	टि	विं	ध्या	ऽ	च	ल
रें	–	सां	नी	सां	ध	ध	ध
सिं	ऽ	धु	च	र	ण	त	ल

टिप्पणी

–	म	म	म	ध	ध	ध	ध
ऽ	म	हि	मा	शा	ऽ	श्व	त
सां	–	सां	–	प	–	–	–
गा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

दूसरी बार

प	–	प	म	ग	रे	सा	–
गा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा II की स्वरलिपि अंतरा I के समान है।

अंतरा-III

X O

प	प	प	प	–	प	प	ध
प्र	थ	म	स	ऽ	भ्य	ता	ऽ
ध	नी	नी	–	–	–	–	–
ज्ञा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी
सा	ऽ	म	ध्व	नि	त	गु	ण
(रें)	–	सां	–	–	–नी	धनी	धप
गा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

दूसरी बार

X O

रें	–	सां	–	–	–	–	–
गा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
गं	गं	गं	गं	गं	–	गं	गं
ज	य	न	व	मा	ऽ	न	व
गं	–	गं	सां	रें	–	रें	–
ता	ऽ	नि	र	मा	ऽ	ता	ऽ

टिप्पणी

रें	–	रें	रें		रें	–	सां	नी
स	ऽ	त्य	अ		हिं	ऽ	सा	ऽ
रें	–	सां	–		–	–	–	–
दा	ऽ	ता	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
							प	प
							ज	य
सां	–	–	–		–	–	प	प
हे	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ज	य
रें	–	–	–		–	–	प	प
हे	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ज	य
गं	–	–	–		–	–	–	–
हे	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
गं	–	रें	सां		रें	–	सां	नी
शां	ऽ	ति	अ		धि	ऽ	ष्ठा	ऽ
सां	नी	ध	प		म	ग	रे	सा
ता	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	ग	म	प		प	–	प	प
ज	य	ज	न		भा	ऽ	र	त
प	प	ध	प		म	प	म	ग
ज	न	म	न		अ	भि	म	त
–	गग	म	प		प	–	सां	प
ऽ	जन	ग	ण		तं	ऽ	त्र	वि

टिप्पणी

ध	–	ध	–	म	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	प	ध	सां	–	ध	प
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
प	–	प	–	–	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	प	प	प	–	प	प
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
ध	–	ध	–	–	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध़	ध	ध	ध	ध	–	ध	ध
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
नी	–	नी	–	–	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नी	नी	नी	नी	नी	–	नी	नीरें
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
(रें)	सां	सां	–	–	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

पाठगत प्रश्न 5.2

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. कवि ने हिमालय को हमारे देश का ..... बताया है, तथा ..... नदी के सौंदर्य का वर्ण किया है।
2. कवि ने भारत को सजीव ..... के रूप में वर्णित किया है।
3. संसार में भारत की सर्वाधिक ..... है।

टिप्पणी

(ग)

तेरे चरणों में झुका माथ है

प्रस्तुत गीत देश के प्रति आभार प्रकट करने के विषय में है। इस गीत के माध्यम से कवि गंगा, गोदावरी इत्यादि नदियों की प्रकृति एवं सौंदर्य के विशाल स्वरूप का वर्णन करता है। इसमें देश की गरिमा के लिये यहाँ के लोगों का जीवन न्यौछावर करने की तत्परता बतायी गयी है। साथ में उपलब्ध सी.डी. में इस गीत का क्रियात्मक प्रदर्शन सुनें।

स्थायी

तेरे चरणों में (3)
झुका माथ है (3)
तेरे चरणों में
आकाश जिसकी ध्वजाएं उड़ाता,
जो है, युगों से धरा पर सुहाता,
तू है वही मान मन्दिर हमारा,
कण कण जिसे जोड़ता हाथ है,
झुका माथ है
तेरे चरणों में...

गोदावरी गंगा

गोदावरी और गंगा किनारे,
सौगंध है एक ही धूल की,
कश्मीर बंगाल गुजरात केरल
गाता वही धूल की शूल की
जागी हुई देश की आरती में,
जागी हुई भारती साथ है
झुका माथ है...
तेरे चरणों में...

स्वरलिपि

ताल - दादरा (6 मात्रा)

नोट: इस गीत के लिये सी शार्प/पहले काले स्केल का इस्तेमाल करें।

x			0		
			–	सा	रे
			ऽ	ते	रे
ग	ग	ग	–	मग	रेसा
चर	णों	में	ऽ	तेऽ	रेऽ

टिप्पणी

रे	रे	रेग	रेग	सा	रे
चर	णों	मेंऽ	मेंऽ	ते	रे
ग	ग	ग	–	मग	रेसा
चर	णों	में	ऽ	तेऽ	रेऽ
रे	रे	गरे	सानि़	ध़नि़	प़ऽ
चर	णों	ऽऽ	मेंऽ	ऽऽ	ऽझु
ध़	ध़	ध़	ध़	ध़	ध़
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु
नि़	नि़	-नि़	नि़	नि़	नि़ सा
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु
ग	रे	-स	सा	नि़	प़
का	मा	थ	है	ते	रे
सा	सा	सा	–	–	–
चर	णों	में	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा I

x			0		
प	सां	सां	सां	सां	सां
आ	का	श	जिस	की	ऽ
म	ध	ध	ध	ध	ध
ध्व	जा	यें	उ	ड़ा	ता

टिप्पणी

म	ध	ऽध	ध	ध	ऽध
जो	है	ऽयु	गों	से	ऽध
नि	ध	ऽप	प	प	प
रा	प	ऽर	सु	हा	ता
प	ग	–ग	म	म	म
तु	है	ऽव	ही	मा	न
प	ध	ऽनि	ध	प	य
म	न्दि	रऽ	ह	मा	रा
प	ग	रे	सा	प	–प
तु	है	व	ही	मा	ऽन
प	ध	ऽनि	ध	प	प
म	न्दि	रऽ	ह	मा	रा
स	ग	ऽग	ग	मग	रेसा
कण	कण	ऽजि	से	जोऽ	ऽड़
रे	रे	रे	रेग	रेग	रेग
ता	हा	ऽथ	हैऽ	ऽऽ	ऽऽ
सा	स	–ग	ग	मग	रेसा
कण	कण	–जि	से	जोऽ	ऽड़
रे	रे	गरे	नि़	ध़नि	प़ऽ
ता	हा	ऽथ	हैऽ	ऽऽ	ऽझु

टिप्पणी

ध़	ध़	ध़	ध़	ऽ	ऽध
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु
नि़	नि़	नि़	नि़	नि़	निसा
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु
ग	–रे	सा	सा	ध़	प़
का	–मा	थ	है	ते	रे
सा	सा	सा	–	–	–
च	र	णों	में	–	–

अंतरा II

x			0		
सा	धप	धप	प	प	प
गो	दाऽ	ऽऽ	व	री	ऽ
सा	म	–	–	–	–
गं	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	धप	धप	प	प	प
गो	दाऽ	ऽव	री	औ	र
ग	–रे	–स	रे	ग	ऽ
गं	ऽगा	–कि	ना	रे	ऽ
रेग	रेसा	रेसा	ध़स	ध़प	ध़प़
सौऽ	ऽग	न्ध	हैऽ	ऽए	ऽक
ग	–रे	–सा	सा	–	–
ही	ऽ	–धू	ऽ	ल	की
प	सां	सां	सां	सां	सां
क	श्मी	र	बं	गा	ल

टिप्पणी

म	ध	ध	ध	ध	ध
गुज	रा	त	के	र	ल
म	ध	ध	ध	ध	ध
गा	ता	व	ही	धू	ल
नि	धऽ	प	प	ऽ	ऽ
की	शू	ल	की	ऽ	ऽ
प	प	ग	म	म	–म
जा	गी	हु	ई	दे	–श
प	ध	–नि	ध	प	ऽ
की	आ	–र	ती	में	ऽ
प	ग	रे	सा	प	–प
जा	गी	हु	ई	दे	ऽश
प	ध	–नि	ध	प	ऽ
की	आ	–र	ती	में	ऽ
सा	ग	–गु	ग	मग	रेस
जा	गी	–हु	ई	भाऽ	ऽर
रे	रे	रे	रेग	रेग	रेग
ती	सा	ध	हैऽ	ऽऽ	ऽऽ
सा	ग	–ग	ग	मग	रेस
जा	गी	–हु	ई	भा	ऽर
रे	रे	गरे	सानि	धनि	पऽ
ती	सा	थऽ	हैऽ	ऽऽ	ऽझु
ध़	ध़	ध़	ध़	ध़	ऽध़
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु

नि़	नि़	नि़	नि़	नि़	नि़सा
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु
ग	रे	सा	–	ध़	प़
का	मा	थ	है	तें	रे
सा	सा	सा	–	–	–
चर	णों	में	–		

पाठगत प्रश्न 5.3

सही प्रश्न चुनिए–

1. गीत में आभार प्रगट किया गया है।

   (i) देश के प्रति

   (ii) मानवता के लिए

   (iii) आकाश के लिए

2. कवि ने नदियों के सौंदर्य का वर्णन किया है।

   (i) गंगा, गोदावरी

   (ii) कृष्णा, कावेरी

   (iii) नर्मदा, ताप्ति

3. भारत के लोग हमेशा अपने जीवन का बलिदान देने के लिए तत्पर होते हैं क्योंकि–

   (i) वन्य जीवन के रक्षण के लिए

   (ii) राष्ट्र की गरिमा को बचाने के लिए

   (iii) हरे पौधों के रक्षण के लिए।

टिप्पणी

(घ)

चंदा जैसी धरा हमारी

''जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी''

अर्थात यह धरती, जिस पर हमने जन्म लिया है वह हमारे लिए स्वर्ग से बढ़कर है।

ठीक इसी प्रकार के भावों को इस देशभक्ति गीत के माध्यम से व्यक्त किया गया है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। हमारे देश के बहुत से पर्व व त्यौहार यहां पर होने वाली उपज के मौसम पर ही आधारित हैं। हमारे लिए फसल के दाने किसी हीरे, जवाहरात आदि रत्नों से कम नहीं हैं। हमारे देश में अध्यात्म को अत्यन्त महत्त्व दिया जाता है जिसके कारण पूरा विश्व हमारे देश को गुरूपद मानता है। हमारा देश इस प्रकार का सदाबहार बाग है जिसमें सदैव प्रेम के गीत गाए जाते हैं। एक ओर इस देश का किसान मेहनत करके देश के लोगों को अन्न उपलब्ध कराता है तथा दूसरी ओर हमारे देश की फौज का जवान हमारे लोगों की बाहरी आक्रमण से रक्षा करने में पूर्ण रूप से जागरूक है। इसलिए हम इन दोनों को नमन करते हैं। हमारे देश का कामगार और तकनीकी कारीगर पूरे विश्व में सर्वोच्च है। साथ में उपलब्ध सी.डी. में प्रस्तुत गीत के क्रियात्मक प्रदर्शन को सुनें।

चंदा जैसी धरा

स्थायी

चंदा जैसी धरा हमारी, फूल समान हमारा वतन
भारत के खेतों में उपजें, हीरे, मोती, लाल रतन

अंतरा-1

मिट्टी में सोना उपजाते इसके मेहनत कश इंसान
सीमाओं की रक्षा करते जागरूक है वीर जवान
या किसान हो या जवान हो दोनों को शतबार नमन
भारत के .....

अंतरा-2

रक्षक है ईमान हमारा धर्म हमारा पहरेदार
इसलिये सारी दुनिया में देश हमारा है सरताज
प्रीत के गीत है कोयल गाती यह है सदाबहार चमन
भारत के .....

टिप्पणी

अंतरा-3

इसकी मिट्टी की खुशबू में कुदरत ने हैं मस्ती भरी
दुनिया भी है दंग देखकर, कामगारों की जादूगरी
लाख कोशिशें कर ले दुश्मन, छीन सकेगा न इसका अमन
भारत के .....

स्वरलिपि

राग-पाहारी, ताल-केहरवा (8 मात्रा)

यह गीत पहाड़ी राग पर आधारित है और ताल कहरवा में निबद्ध है। स्वर तीसरा काला (F#) है।

आलाप

X				O			
ध	–	–	–	स	नि़	रे	सा
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	ध़	–	–	–	–	–	–
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	–	–	–	ध़	–	रे	–
हो	ऽ	ऽ	ऽ	हो	ऽ	हो	ऽ
सा	–	–	–	–	–	–	–
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

स्थाई

प़	–	प़	–	ग	–	ग	–
चं	ऽ	दा	ऽ	जै	ऽ	सी	ऽ
रे	रे	–	रे	ग	–	ग	–
ध	रा	ऽ	ह	मा	ऽ	री	ऽ
रे	रे	–	रे	सा	–	ध़	ध़
फू	ऽ	ल	स	मा	ऽ	न	ह

टिप्पणी

रे	स	ग	रे	सा	–	–	–
मा	ऽ	रा	व	तन	ऽ	ऽ	ऽ
ध़	–	ध़	ध़	ध़	–	ध़	सा
भा	ऽ	र	त	के	ऽ	खे	ऽ
ध़	प़	प़	प़	प़	प़	प़	प़
तों	ऽ	में	ऽ	उ	प	जे	ऽ
प	–	प	–	म	–	म	–
ही	ऽ	रे	ऽ	मो	ऽ	ती	ऽ
ग	–	ग	रे	ग	रे	–	ध़
ला	ऽ	ल	र	तन	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	प	–	ग	–	ग	–
चं	ऽ	दा	ऽ	जै	ऽ	सी	ऽ
–	–	–	प	म	ग	रे	स
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा 1

X				O			
प	–	प	–	प	–	प	–
मि	ऽ	ट्टी	ऽ	मे	ऽ	सो	ऽ
ध	प	ध	प	ग	रे	ग	–
ना	ऽ	उ	प	जा	ऽ	ते	ऽ
–	–	–	प	म	ग	रे	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

टिप्पणी

सा	–	सा	सा	रे	–	ग	–
इ	स	के	ऽ	मेह	ऽ	नत	ऽ
ध	ध	ध	–	प	–	–	प
क	श	इं	ऽ	सा	ऽ	ऽ	न
ध	ध	ध	–	ध	–	ध	म
सी	ऽ	मा	ऽ	ओ	ऽ	की	ऽ
ग	–	म	रे	रे	–	रे	रे
र	ऽ	क्षा	ऽ	कर	ऽ	ते	ऽ
रे	–	रे	रे	ग	–	ग	–
जा	–	ग	रु	ऽ	क	है	ऽ
ध	–	ध	प	प	–	–	प
वी	ऽ	र	ज	वा	ऽ	ऽ	न
प	–	प	–	ग	–	ग	–
या	–	कि	सा	ऽ	न	हो	ऽ
रे	रे	–	रे	ग	–	ग	–
य	–	ज	वा	ऽ	न	हो	ऽ
रे	–	रे	रे	रे	सा	–	–
दो	–	तो	ऽ	को	ऽ	श	त
ग	रे	ग	रे	सा	–	–	–
बा	ऽ	र	न	म	न	ऽ	ऽ
ध	–	ध	ध	ध	–	ध	सा
भा	ऽ	र	त	के	ऽ	खे	ऽ
ध़	प़	प़	प़	प़	प़	प़	प़
तो	ऽ	मे	ऽ	उ	प	जे	ऽ
प	–	प	–	म	–	म	–
ही	ऽ	रे	ऽ	मो	ऽ	ती	ऽ

टिप्पणी

ग	–	ग	रे	|	ग	रे	–	सा
ला	–	ल	र	|	तत	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	प़	–	|	ग	–	झ	–
चं	ऽ	दा	ऽ	|	जै	ऽ	सी	ऽ
–	–	–	प	|	म	ग	रे	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	–	–	|	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

इसी प्रकार दूसरे और तीसरे अंतरे की स्वरलिपि है।

पाठगत प्रश्न 5.4

1. ''जननी चन्मभूमिश्च इच स्वर्गादपि गरियसी'' इस पंक्ति का अर्थ लिखिए।
2. भारत के किस ऋतु पर कई मेले एवं पर्व आधारित हैं?
3. वह कौन-सी वस्तुएं है, जिनकी तुलना फसल के होने के साथ की जाती है।

टिप्पणी

(ङ)

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा

'सारे जहां से अच्छा' एम. इकबाल द्वारा लिखा गया एक प्रचलित देशभक्ति गीत है। इसे 'तराना-ए-हिन्द' नाम से भी जाना जाता है। स्वतंत्रता के पूर्व लगभग 1904 में लिखे गये भारतीय उप-महाद्वीप के इस स्तुतिगान का सामान्य अर्थ है कि हमारा देश हिन्दोस्तान समस्त संसार से अच्छा है। हम इसकी बुलबुले हैं और यह हमारा गुलिस्तान है। यह सबसे ऊंचा पर्वत है जो हमारी रखवाली करता है। इसकी गोद में हज़ारों नदियां किलकारी करती हैं, जिससे स्वर्ग को भी ईष्या हो जाये। धर्म आपस में द्वेष करना नहीं सिखाता। मूल गीत में अन्य पद भी हैं, परन्तु नीचे दिया गया संक्षिप्त संस्करण भारत में विविध धुनों में प्रचलित हैं।

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा

शब्दकार–एम. इकबाल

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुल बुलें हैं उसकी, वो गुलसिताँ हमारा।।

पर्वत वो सबसे ऊँचा, हम साया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।

गोदी में खेलती हैं, इसकी हज़ारों नदियाँ।
गुलशन हैं जिनके दम से, रश्के जिना हमारा।।

मज़हब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा।।

टिप्पणी

''सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा''

ताल–कहरवा (द्रुत लय) या धुमाली

0
– सा
सा

स्थायी

x		0		x		0		x		0		x		0	
रेम	– –	पध	–म	पध	ध–	––	प–	मप	–म	प–	–सां	धप	म–	– –	सां –
रे ऽ	ऽ ऽ	जहाँ	ऽसे	अऽ	च्छाऽ	ऽऽ	हिऽ	न्दोऽ	ऽस	ताँऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽ ऽ,	हम
नां निः	–ध	नि–	–ध	निरें	सा–	––	ध–	पप	–म	प–	–सां	धप	म–	– –	सां–
बुल	ऽ बु	लेऽ	ऽहैं	उस	कीऽ	ऽऽ	वोऽ	गुल्	ऽसि	ताँऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽ ऽ,	सा
रेम	– –	पध	– म	पध	ध–	––	प–	मप	–म	प–	–सां	धप	म–	– –	– –
रेऽ	ऽ ऽ	जहां	ऽसे	अऽ	च्छाऽ	ऽऽ	हिऽ	न्दोऽ	ऽसि	ताँऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ

अन्तरा

x		0		x		0		x		0		x		0
सां–	–सां	धम	–ध	सां–	सां–	––	धसां	रं–	––	सारें	गरे	सांनि	ध–	ध –
वऽ	ऽत	वोस	बसे	ऊँऽ	चाऽ	ऽऽ	हम	साऽ	ऽऽ	याआ	ऽस	मांऽ	काऽ	ऽ ऽ
रे –	–सां	निसां	–नी	धनि	धप	––	प–	मप	–म	प–	–सां	धप	म' –	– –
संऽ	ऽत	रीऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽऽ	बाँऽ	पाऽ	ऽस	बाऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽ ऽ
रेम	–म	पध	–म	पध	ध–	––	प–	मप	–म	प–	–सां	धप	म–	– –
रेऽ	ऽऽ	जहाँ	ऽसे	अऽ	च्छाऽ	ऽ ऽ	हिऽ	न्दोऽ	ऽस	ताँऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽ ऽ

शेष दो अन्तरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

पाठगत प्रश्न 5.5

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. ..... जोकि सबसे ऊंचा पर्वत है, हमारी रक्षा करता है।
2. स्तुति गान का सामान्य अर्थ है, कि हिन्दुस्तान समस्त ..... से अच्छा है।
3. हिमालय पर्वत की गोद में हजारों उल्लासपूर्ण नदियाँ हैं, जिससे ..... होती है।

आपने क्या सीखा

1. देश भक्ति के गीतों में कवियों ने भारत के लोगों को अलग प्रकार से वर्णित किया है।
2. कवि ने अनेकता में एकता को बताते हुए अपने देश के प्रति अपने भक्तिभाव को दर्शाने का प्रयत्न किया है।
3. राष्ट्र के प्रति कृतज्ञता तथा गंगा, गोदावरी आदि नदियों की सुंदरता दर्शाया गया है।
4. ऐसा उल्लेख किया गया है कि भारत के लोग, देश की प्रभुसत्ता को बचाने के लिए सदैव अपने जीवन का बलिदान करने को तैयार रहते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. ''हिंद देश के निवासी'' इस कविता की पृष्ठ भूमि को समझाइए।
2. ''एकता में अनेकता'' वर्णन कीजिए।
3. ''कवि ने भारत को एक सजीव प्रतिमा'' के रूप में वर्णित किया है। कैसे?
4. माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी महान है। समझाइए।
5. ''सारे जहाँ से अच्छा'' इस गीत के अर्थ की पृष्ठभूमि को समझाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1

1. वर्णित
2. माला, फूल
3. नदियों, सागर

5.2

1. गौरव, गंगा
2. प्रतिमा
3. प्राचीन सभ्यता

टिप्पणी

5.3

1. देश के प्रति
2. गंगा, गोदावरी
3. राष्ट्र की गरिमा को बचाने के लिए

5.4

1. जननी एवं जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान है।
2. उपज के मौसम
3. कीमती रत्न, जैसे- हीरे, जवाहरात

5.5

1. हिमालय
2. संसार
3. स्वर्ग को भी ईर्ष्या